INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS A

February 2022 E-ISSN : 2348-7143

International Research Fellows Association's

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Special Issue – 286 (B)

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक/लेखिका	पृ.क्र.
०१	'धरती आबा' नाटक में चित्रित आदिवासी चेतना	डॉ. योगिता हिरे, प्रो. डॉ. अनिता नेरे	०७
०२	आदिवासी समाज : वर्तमान दशा और दिशा	डॉ. अशोक जाधव	१३
०३	महादेव टोप्पो की कविताओं में आदिवासी चेतना	प्रो. डॉ जिभाऊ मोरे	१७
०४	हिंदी काव्य विधा में आदिवासी चेतना	डॉ. पूनम बोरसे	२२
०५	हिंदी काव्य में आदिवासी चेतना	डॉ. राजाराम शेवाले	२९
०६	आदिवासी कहानियों में चेतना के स्वर	डॉ. रघुनाथ वाकळे	३३
०७	कवि बृजेश सिंह की गज़लों में अभिव्यक्त आदिवासी चेतना	प्रा.रविंद्र ठाकरे, प्रो. डॉ. अनिता नेरे	३८
०८	आदिवासी विमर्श	प्रा. के. के. बच्छाव	४३
०९	लोक संस्कृति का संवाहक - आदिवासी समाज	डॉ. यशोदा मेहरा	४५
१०	हिंदी काव्य नाटक विधा में आदिवासी चेतना	डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी	४९
११	निर्मला पुतुल की कविताओं में आदिवासी स्त्री विमर्श	प्रा. हंसा बागरे	५२
१२	हिंदी मौखिक इतिहास मे आदिवासी चेतना	डॉ. ज्योती रामोड	५७
१३	राजेंद्र अवस्थी के उपन्यास में आदिवासी विमर्श	डॉ. सीताबाई पवार	६०
१४	हिंदी कविताओं में आदिवासी चेतना	डॉ. योगिता घुमरे	६४
१५	उपन्यास साहित्य में चित्रित आदिवासी जीवन संघर्ष	प्रा. निलेश पाटील	६७
१६	हिंदी साहित्य में आदिवासी चेतना	प्रा. निलेश देशमुख	७०
१७	कथाकार संजीव के 'धार' उपन्यास में चित्रित आदिवासी चेतना	डॉ. अनिता राजबंशी, प्रो. डॉ. अनिता नेरे	७४
१८	आदिवासी समाज और हिंदी नाटक	डॉ. दीपा कुचेकर	७९
१९	हिंदी उपन्यास विधा में आदिवासी चेतना	डॉ. बाबासाहेब रसूल शेख	८५
२०	हिन्दी साहित्य में आदिवासी चेतना	प्रा. जगदीश पाटनवार	८८
२१	२१ वी सदी के हिंदी काव्य में आदिवासी चेतना	डॉ. संदिप देवरे	९१
२२	'मौन घाटी' उपन्यास में आदिवासियों का सामाजिक जीवन	प्रा. हर्षल बच्छाव, प्रो. डॉ. अनिता नेरे	९४
२३	हिंदी काव्य विधा मे आदिवासी चेतना	प्रा. दिपक आहिरे	९७
२४	समकालीन आदिवासी साहित्य में जन चेतना	प्रा. राकेश पगार	१००

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

Scanned with CamScanner

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Issue – 286 (B) : हिंदी साहित्य में आदिवासी चेतना
Impact Factor : 6.625 Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
February-2022

'मौन घाटी' उपन्यास में आदिवासियों का सामाजिक जीवन

प्रा. हर्षल गोरख बच्छाव
समाजश्री प्रशांतदादा हिरे
महाविद्यालय नामपुर, तह. बागलान
नाशिक (महाराष्ट्र)

प्रो. डॉ. अनिता पोपटराव नेरे
शोधनिर्देशक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष, म.स.गा.महाविद्यालय,
मालेगाँव-कैम्प, तह. मालेगांव, जि.नासिक

प्रस्तावना :-

आदिवासी अर्थात आदिम जनजाति के लोग । भारत में अनेक जाति-जनजातियाँ, धर्म, पंथ तथा संस्कृति-संप्रदायों का भंडार हैं । जाति व्यवस्था को भारतीय समाज जीवन में प्रमुखत: प्राप्त है । भारत में आर्यों का आगमन हुआ इसी कारण आदिवासियों और आर्यों में दीर्घकाल तक संघर्ष होता रहा, जिस कारण आदिवासियों की सामाजिक दूर्दशा का आरंभ हुआ । यही वनवास का कारण बना और वर्ण व्यवस्था यही से सुरु होई । आदिवासियों का शोषण इसी समय प्रारंभ हुआ ।

आदिवासी समाज हमेशा जंगल, पहाडियों में बेबस, शोषित और मौन जीवन जीने के लिए अभिशप्त हुआ । आज परिवर्तन के दौर में भी आदिवासी समाज का शोषण कम नहीं हुआ है । उसका सामाजिक स्तर वही है । आदिवासी समाज की महिलाओं पर अत्याचार, आरोग्य की असुविधा, अशिक्षा, अंधविश्वास, जमींदारों द्वारा शोषण, ऋण देकर जमीनें हड़पना, बाहर से आकर आदिवासियों की जमीनें सस्ते में खरिदकर उन्हें मजदूरी करने पर मजबुर करना, आदिवासियों में झगड़े करवाकर उन्हें हमेशा विभक्त रखना, वन विभाग के अधिकारी एवं फोरेस्ट गार्ड द्वारा आदिवासी महिला एवं लड़कियों पर अत्याचार, जंगल की कटाई, पी.डब्ल्यु.डी. विभाग की मनमानी, पाठशाला की दूर्दशा और विस्थापन यह सारी समस्याएँ आदिवासियों के जीवन का अविभाज्य हिस्सा हैं ।

'मौन घाटी' उपन्यास मे आदिवासी जनजीवन :-

फादर पीटर पॉल एक्का आदिवासी साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर हैं । उनका जीवनानुभव एवं अभिव्यक्ति का दायरा व्यापक हैं । अत: उनके उपन्यासों में आदिवासीयों के भोगे हुए जीवन की दशा का मार्मिक चित्रण मिलता है ।

'मौन घाटी' उपन्यास में उपन्यासकार ने आदिवासियों के जीवनयापन, शोषण, गरीबी, अत्याचार इन सारी बातों पर प्रकाश डाला हैं । उपन्यास के प्रारंभ में ही उपन्यास का प्रमुख पात्र किशोर और रजनी शहर से गाँव आते हैं । किशोर वकील की पढ़ाई कर रहा है, तो रजनी बी.एड्. कर रही है । उपन्यास में उस समय का चित्र हैं जब आदिवासी गाँव छोड़कर जा रहे थे, यह परिवर्तन का दौर था । उँचे वर्ग द्वारा आदिवासियों का शोषण, महिलाओं पर अत्याचार, भ्रष्टाचार, अशिक्षा, रोज़गार का अभाव, वनो की कटाई, विस्थापन इन सारी बातो से किशोर चिंतीत है ।

अंबाघाट के स्टैण्ड पर किशोर और रजनी उतरते हैं । लाला बनवारी लाल का होटल दिखाई देता है । लाला ऐसा व्यक्ति है जिसने छोटे झोपड़ी से होटल की सुरुवात थी, अब वही झोपड़ी बड़ा होटल बन गयी है । जिसे 'बिझेनस' कहकर किशोर व्यंग करता हैं । उसके पास ही 'सूरतसिंह मोटर वर्क्स' का बोर्ड टंगा हुआ था । वर्ष भर में ही सूरतसिंह ने अपना व्यवसाय बढ़ा लिया था । क्योंकि आसपास कोई भी गॅरिज नहीं था । तो सूरजसिंह अपनी मनमानी करता था । लोगों को ठगता था ।

गाँव के इस परिवर्तन को देख किशोर और रजनी का संवाद वास्तविकता पर प्रकाश डालता है । "इलाके में कितनी सारी तब्दीलियाँ तेजी से होती जा रही हैं ।' उस समय रजनी का जबाब बड़ा ही मार्मिक

Scanned with CamScanner

रहा। 'हाँ, हो तो रही है पर औरो की, गाँववालों की थोडे ही ? हमारे देहाती आदिवासी तो वही के वही रह गये है।"(1)

वास्तव में बाहर से आये लोग झोपड़ी से मकान और मकान से इमारतों में रहने लगे किंतु गाँव के आदिवासी तेल के दिये में ही अपना जीवन गूजार रहे हैं।

कुसुमपुर और उसके आस-पास के गाँवो के लोग गाँव छोड़कर शहर जाने लगे हैं और जिससे पहाड़ी गाँव खाली होने लगे। उस जगह को अधिकारी लोग एवं बाहर से आये लोग सस्ती किंमत देकर खरीद रहे हैं। ठेकेदार, रेंजर, मुखिया, हरिया, सुब्बाराव, जालसिंह इनका राज गाँव में चल रहा हैं। यह सब एक-दूसरे से मिले हुए सफेदपोश हैं। जो गाँव के लोगों को गाँव छोड़ने पर मजबुर करते हैं। उनकी जमीनें सस्ते में खरीद रहे हैं, ऋण देकर जमीनें हड़प रहे है। इस संदर्भ में रमणिका गुप्ता लिखती हैं, "हजारों बरसों से या कहूँ सदियों से आदिवासियों को खदड़ने का काम जारी है। उन्हें जंगलो में आदिम जीवन जीने के लिए मजबुर कर सभ्यता से दूर रखने की साजिश भी इस बीच जारी रही साथ ही उनका शोषण और दोहन भी।"(2) 'मौन घाटी' उपन्यास इसका जीवंत उदाहरण हैं।

कुसुमपुर की पाठशाला में सरोज, सरस्वती, सुधारानी जैसी महिला शिक्षिकाओं ने गरीबों की मदद की, गाँव के विकास के सपने देखे किंतु वहशी दरिंदो के जाल में फँसकर उनका शिकार हुई। पाठशाला में सुधा और संजय ने आते ही बदलाव लाये थे। दोनों गाँव में घुलमिल गये। सुधा ने गाँव की लड़कियों को पढाने की जिम्मेदारी ली। किंतु एक दिन मुरिया धोके से सुधा को उठा ले गया। दूसरे दिन सुधा की लाश जंगल में मिली। इस हादसे से संजय ने नौकरी का इस्तीफा दे दिया। लोगों को लगा जंगली जानवर ने शिकार की होगी। वास्तव में सुब्बाराव, जालसिंह, हरिया और ठेकेदार ने उस पर अत्याचार किया था, पर गाँव वाले मौन रहे थे। क्योंकि जो भी उनका विरोध करता वह उसका शोषण करते थे। उनके जुल्म बढ़ते ही जा रहे थे।

'केसर' उपन्यास का एक ऐसा पात्र है जो ठेकेदार के शोषण का शिकार हुआ था। केसर की गाँव में सात-आठ एकर जमीन थी जिसे केसर मेहनत से कसता था। घर में बीमार पत्नी और एक बेटी थी। बेटी को जित्तन से प्रेम हो जाता है। केसर मनसुख ठेकेदार से एक हजार रुपये का ऋण लेता है, परंतु वर्षा न होने से उसे साल वह ऋण अदा न कर पाया और जमीन मनसुख के नाम लिख दी गयी। पाँच एकर जमीन रेंजर जालसिंह ने अपने नाम लिखवा ली। सरकारी दफ्तर में रुपये देकर सभी काम निकलवाये जाते है। यहा घुस देकर आदिवासियों की ज़मीन हड़पकर अपना काम बना लिया जाता हैं। अंबाघाट के प्रदेश में वनों की कोई कमी नहीं थी। आदिवासी लोग उस घने जंगल में खुश थे। किंतु वन-विभाग के रेंजर साहब ने सखुए के घने जंगल का ठेका अपने नाम ले लिया था। सखुए के घने जंगल बेरेहरमी से कटने लगे, उसके साथ ही गाँव की औरते, युवतियाँ भी उस काम के लिए लगा दी गयी। रेंजर और गार्ड जब चाहे उनका इस्तमाल करने लगे। वनों को भेट करने वाले बाबूओं को शराब और शबाब देकर खुश किया जाता रहा। आदिवासियों के लिए जंगल लगभग वंद हो गया था। पुरुषों को गार्ड पकड लेते थे तो औरतों को गार्ड के पास पहुँचाया जाता था। फोरेस्ट गार्ड का विरोध करने पर गाँव के युवक कोंदा की हत्या की गयी। इस हत्या को लोगो ने देखा था फिर भी गाँव मौन रहा।

गाँव में ठेकेदार मनसुख एक लोटा लेकर आया था। कुछ पैसे भी थे। छोटी सी पूँजी लगाकर उसने ऋण देने का व्यापार सुरु किया, जिससे हजारो का व्यापार होने लगा। गाँव के गरीब आदिवासियों की नब्ज उसने पहचान ली थी। गाँव के भोले-भाले, सीधे-साधे मेहनती आदिवासियों को भविष्य की चिंता न थी, न अतीत का खयाल रहा था। धनसी मुरिया ने शराब की दुकान सुरु कर दी थी और उसे मनसुख ने अपने ओर मोड़ लिया था। आदिवासी मेहनत से कमाये पैसे शराब में गवां देते और उनकी पत्नियाँ रोती रह जाती। दारु के कारण लोगों में झगड़े होते, दुश्मनी होती। यही मनसुख चाहता था। लोगों में एकता न हो इसके लिए वह हर संभव प्रयास करता रहता था। एक दिन ढोंगी तराई का रमन अपने दोस्तों के साथ दारु पीने आया, वहा महुवापाली का जोगा पहले से अपने दोस्तों के साथ दारु पी रहा था। 'गोमती' को वह गाँव वधु की तरह उठा लाया था। यह देख रमन और जोगा में लड़ाई हो गयी, दो लोगों की जान गयी। अब दोनों गाँवो में दुश्मनी हो गयी। बाहर से आने वाले लोग यही चाहते थे की गाँव के लोग आपस मे लड़े, कभी एक न हो और उनका राज बरसो चलता रहे।

Scanned with CamScanner

आदिवासी महुआ जुटाते और बेचते थे । मनसुख आदिवासियों को ड़राकर उनसे सस्ते में महुआ खरीदता और उसकी दारु बनाकर चौगुने दामों में उन्हीं को बेचता । आदिवासियों की नशाखोरी की वजह से एक लोटा लेकर गाँव आनेवाला मनसुख ठेकेदार अब अपना साम्राज्य खड़ा कर चुका था, और गाँववाले को वही के वही थे ।

उपन्यास का नायक किशोर राँची में वकीली की पढ़ाई समाप्त कर गाँव आता है । सामुकाका ने पहले ही उसे गाँव के आदिवासियों का, सुब्बाराव, ठेकेदार मनसुख, रेंजर, फोरेस्ट गार्ड इनके द्वारा किस तरह शोषण हो रहा है, यह बता दिया । उपन्यास के अन्य पात्र रजनी, सामुकाका, किशोर के शहर की मित्र पंकज, मंजु, तपन गाँव के अस्पताल की नर्स संध्या इन सबकी मदद से गाँव के लोगों में जागृति लाना चाहता हैं । वे सब योजना बनाकर अन्याय के विरोध में खड़ा होना चाहते हैं । गाँव के चुनाव में अपना हिस्सा लेकर गाँव के पुरुष-स्त्रियों को एक कर चेतना जगाते हैं ।

गाँव में मनसुख के लोगों का राज था । वे ही चुनाव लडते थे । चूनाव के बाद दिखावे के लिए आदिवासियों के उत्थान पर खर्च किया जाता था । वास्तव में कोई नहीं चाहता आदिवासियों का उत्थान हो । वे तो केवल मेहनत-मजदुरी के लिए बने है औरो के चरण की धुली है । मानो शोषित, लाचार, गरीब रहना ही उनका धर्म हो ।

गाँव का चुनाव किशोर लड़ता हैं । सामुकाका अपने भाषण से लोगों को जागृत करते है तो मनसुख और उसके साथी आदिवासियों को शराब पिलाकर अपना प्रचार करते हैं । गाँववालो ने किशोर को नेता चुनकर खुशहाल घाटी का सपना देखा था । अंत में किशोर चुनाव में विजयी होता है । हरिया, मनसुख, सुब्बाराव और जालसिंह, गाँव छोड़कर चले जाते हैं । अब 'मौन घाटी' में विकास के सपने देखे जाने लगते हैं । ढोल, नगाड़े बजेंगे, खुशहाल फिजा, पंछियों के गीत और उन्मुक्त आकाश के सपने आदिवासी देखेंगे एसा विश्वास किशोर व्यक्त करता है ।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार 'मौन घाटी' उपन्यास के आदिवासियों को जंगल से खदेड़ना, विस्थापन, शिक्षा से दूर रखने का प्रयास, अस्पतालों की भयावह अवस्था, वन विभाग के लोगों का अत्याचार, पी.डब्लु.डी. के लोगों के द्वारा शोषण और वनों की कटाई, नशाखोरी आदि बातों को मार्मिक रुप सें उजागर किया गया हैं ।

उपन्यासकार पीटर पॉल जी आदिवासियों का जीवन संघर्ष करीब से दर्शन कराते हैं । आदिवासियों का शोषण करना उनको अपनी कठपुतली बनाना, उनकी स्त्रियों पर अत्याचार करना, ऋण देकर जमीनें लुटना, शराब पिलाकर चुनाव जीतना, इन सारी बातों को पीटर पॉल जी ने बखुबी उजागर कर उपन्यास द्वारा आदिवासियों का उत्थान करने का प्रयास किया है ।

संदर्भ ग्रंथ :-

१. मौन घाटी – पीटर प़ाल एक्का, पृ. क्र. ४
२. आदिवासी कौन - रमणिका गुप्ता, पृ. क्र. ५.

Scanned with CamScanner